गायत्रीबाला पंडा की कविताएँ बिल्कुल ताजा, मार्मिक एवं अपूर्व हैं । ये कविताएँ हमारे जीवन को अप्रत्याशित तरीके से देखती और प्रस्तुत करती हैं जैसे कि 'रात' शीर्षक कविता या 'दयानदी' जो स्तब्ध कर देनेवाली पंक्ति पर समाप्त होती है – 'मेरी देह ही दयानदी है'। इस संग्रह की कविताओं में एक तीक्ष्ण एवं बेधक जीवन–दृष्टि सक्रिय है, उदाहरण के लिए 'कला' शीर्षक यह कविता :

माँस बेचने की तरह
माँस खरीदना भी एक कला है
और माँस में तब्दील हो जाना भी ।

'ज़मीन पर पड़ी चूड़ी', 'आरामकुर्सी', और 'अंगूठे का निशान' सरीखी कविताएँ दैनंदिन की तात्कालिकता को विह्वल स्थायित्व प्रदान करती हैं एवं अपने आकस्मिक बिंब संयोजन से हमें निःशस्त्र कर देती हैं :

लड़कियों को
फूल
या झरना
या पेड़
या बम
कोई कैसे भी सजा सकता है
उपमाओं में ।

'देवी' नामक कविता तो समकालीन भारतीय काव्य के लिए एक उपलब्धि है, एक साथ यातनापूर्ण एवं रस–संतृप्त । यह भारतीय पौराणिक स्मृति, लोक आख्यान एवं समकालीनता के अद्‌भुत रसायन से उद्‌भूत है ।

गायत्रीबाला भारतीय कविता के भावी मंत्र का उच्चार हैं । लेकिन सभी कवियों के भाग्य में ऐसा भाव–प्रवण अनुवादक राजेंद्र प्रसाद मिश्र कहाँ !

अरुण कमल